आपातकाल में सृजन फुलवारी

रमा प्रेम-शांति

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रमा-प्रेम-शांति

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-211-1
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www-antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, रमा-प्रेम-शांति
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RAMA-PREM-SHANTI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुजर रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (COVID19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय श्समकित सुरानाश् से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय "संदीप सोनी" ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सजा को कुछ करके खेत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	विश्वास	6
2.	प्रकृति की आवाज	7
3.	आत्मा नदियो की रो रही है	8
4.	मानवता	9
5.	एक कदम भरोसे का	10
6.	पेड़ की व्यथा	11
7.	धड़कन	12
8.	पुलवामा अमर शहीदो को नमन	13
9.	कैसे? मैं माफ करूँ	14
10.	देर	15
11.	बारिश	16
12.	मायने	17
13.	आस्तीन का सांप	18
14.	चिंतन	19
15.	प्रकृति का दर्द कोरोना	20
16.	-हृदय तल से नमन	21

विश्वास

दिन पे दिन इंसानो का इंसानो से
विश्वास हटता जा रहा है
कर रहे अपने ही जो अपने से ही विश्वासघात
उसी से ये माहौल और बिगड़ता जा रहा है

रिश्तो की भी अहमियत नहीं समझ रहे लोग आज
बस पैसो के पीछे अपना, अपनो का तक खून किया जा रहा है
छोटे-बड़ो का लिहाज भी
लोगो के दिमाग से कोसो दूर होता जा रहा है

पहले होते थे पड़ोसी सगे रिश्तेदारो से बढ़कर
लेकिन..... अब उनसे भी विश्वास घटता जा रहा है
हमारी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति, सभ्यता भी
आज बच्चा अपनाने से कतराते जा रहा है

पश्चिमी सभ्यता का वो चोला पहनकर बहुत इतरा रहा है
अपनी निज भाषा छोड़,
विदेशी भाषा को बोल बोल कर अपनी
भाषा को खत्म करने में जोर दे रहा है

मेरे भारत देश की मूल पहचान गाँव है
लेकिन ..... अमीरो के कारण, गांव खाली करवाया जा रहा है
ऐसे ही बहुत से कारणो के कारण
इंसानो से ही नहीं बल्कि अब ईश्वर, अल्लाह से भी
रमा विश्वास खत्म होता जा रहा है।

प्रकृति की आवाज

हे मानव, क्यो? तू अपनी खुशी
अपने परिवार, समाज, दूसरो को रईसी
बताने, दिखाने के लिए
मुझे आज पूरी तरह नुकसान पहुंचाता जा रहा है।
मेरी खुशी, मेरा परिवार,
मेरे समाज की, बेरहमी से कटाई,
भविष्य की चिंता किए बगैर तू
बिन सोचे-समझे, किया जा रहा है ।
तूने मेरे आंगन के
नव पल्लवित बच्चे के सीने में चढ़कर मुझे
मेरे कुटुम्ब के सदस्य (डाल, शाखा) से
दूर ही नहीं, खत्म किया जा रहा है।
मैं और मेरे परिवार सहित मेरे समाज ने
तुम सब मानव को, अच्छे से जीने के
शुद्ध हवा, पानी, वनस्पति, खाद्य पदार्थ व औषधि भी
आज दिया जा रहा है।
फिर भी तुझे ये समझ नहीं आता
अपने को विद्वान, बुद्धिजीवी, समाज का रूप बताता
बड़े कर्म, धर्म की बाते करता
अपने देश को, विश्व गुरु बनाने की बात
हर मंचो पर किया जा रहा है।
एक बार सोच जरा, जब हम ना होंगे
तो कैसे तुम लोग भी, धरती पर जी पाओगे
बना रहे मुझे काट-काट, अपना आलीशान आशियाना
उस पे फिर कैसे रह पाओगे, सोचकर मुझे तरस आ रहा है।
करने को रहम मुझ पर, आज सिर्फ वनवासी करते
मेरे साथ रहते, प्रेम करते, मुझे विधि-विधान से पूजते
उन्हें भी मुझसे दूर कर, मेरे और मेरे परिवार की
आत्मा पर भी -रमा-, फिर वार किया जा रहा है।

आत्मा नदियों की रो रही है

सदियों से देखती आ रही हूँ
मेरी हालत एक नहीं सुधर रही है,
सबकी कहलाती मैं जीवनदायिनी
लेकिन मेरी ही कद्र नहीं हो रही है।

मईया, माता के नाम से बुलाते
पर इज्जत दिल से नहीं हो रही है,
रेत निकाल निकाल कर काया
मेरी पूरी तरह बदल दी जा रही है।

मल-मूत्र, रासायनिक पदार्थ से
मेरी पवित्रता खत्म हुई जा रही है,
हरी भरी धरती ओढ़ ली गर्मी की
चादर फिर भी समझ नहीं आ रही है।

भाई-बंधु मेरे कई हो गए लुप्त
फिर भी आज लापरवाही हो रही है,
सौंदर्य है मेरा लबालब पानी
पर मेरी खूबसूरती नहीं बढ रही है।

आस्तित्व खतरे में है फिर भी
मेरी लोगो को चिंता नहीं हो रही है,
कई वादे-कसमे किए लोगो ने
-रमा- लेकिन पूरी नहीं हो रही है।

मानवता

मानव रूपी जीवन मिला,
जब तुम सबको यार,
क्यों? शैतानो के जैसे,
फिर करते हो काम।

मानव की जाति होती,
मानवता से भरपूर,
क्यो? बुरे कर्मो से,
मानवता पर लगाते हो धूल।

सृष्टि के हो, हे मानव तुम,
सबसे श्रेष्ठ सृजनकार,
क्यों? ठीक से काम ना कर,
करते अपने को शर्मसार।

वसुंधरा के गर्भ में जैसे है,
अनगिनत हीरे-मोती,
तेरे भी अंदर है छुपे हुए,
देख अनमोल मोती।

अब तो खोलो, अपने मन के,
हे मानव तुम द्वार,
देखो, सोचो, फिर समझ कर,
करो, तुम काम।

एक कदम भरोसे का

बस.... एक कदम तू, अपने भरोसे का रख
फिर देख, सारा जहां तेरा होगा,
अधूरी, बंद रखी थी, जो तूने,
अनगिनत ख्वाहिशे, पूरा होता दिखेगा।

आसमान छूने का सपना, तेरा भी जरूर पूरा होगा,
तू भी नहीं किसी से कम, बस इतना सा ही तुझे सोचना होगा।
फिर देखना मंजिल, तेरे कदमो के नीचे
और आसमान भी, सलाम करेगा।

नारी तू, धरती के समान,
सबल, जननी, जीवनदायिनी, प्रेम का सागर,
तेरे बिना संसार अधूरा, और नहीं कोई तुझ सा दूजा
तुझे इसे अच्छे से, अब समझना ही होगा।

बस तुझे साबित करने के लिए
अपना कदम, समयानुसार अब बढाना ही होगा।

पेड़ की व्यथा

पेड़ पूछे कुल्हाड़ी से,
क्यों तू वार करे है मुझ पे,
तेरा दिल नहीं दुखता क्या,
अपनो पर ही वार कर के।

कुल्हाड़ी बोला मैं क्या जानू,
क्या करना चाहिए मुझे,
तेरे तन का ही हिस्सा,
ये सब कराता है मुझे।

सोच कर फिर पेड़ बोला,
सच बता रहा है तू मुझे,
मेरा अपना ही हिस्सा,
मारने में लगा रहता है मुझे।

ऐसा भी दिन आएगा सोच,
पेड़ फूट-फूट रोने लगा,
अपनी परवरिश पे -रमा-
उसे बहुत दुख होने लगा।

धड़कन

नहीं भूला जाता वो एहसास
प्यारा-प्यारा आज भी माँ को,
कोख में जब बच्चे ने मारी
पहली लात प्यार से माँ को।

नहीं भूली जाती वो धड़कन
धक-धक आज भी माँ को,
उसकी मिली थी पहली धड़कन
अपने बच्चे से जब माँ को।

नहीं भूला जाता कोमल स्पर्श
रूह तक समाया जो माँ को,
रोम-रोम पूरा खिल उठा था
उस छुअन से जब माँ को।

नहीं भूला जाता उस पल को
आज भी -रमा- माँ को,
मुस्कुरा कर पहली बार पुकारा
बच्चे ने माँ, जब माँ को।

पुलवामा अमर शहीदो को नमन

सोचो शहीदो की माँओ को कैसा लगा होगा,
जब बेटो को गोद से अंतिम विदा किया होगा।

सोचो शहीदो के पिता को कैसा लगा होगा,
जो बेटा देता कंधा उसे जब कंधा दिया होगा।

सोचो शहीदो की बहन को कैसा लगा होगा,
रक्षा करने वाला भाई जब कफन में दिखा होगा।

सोचो शहीदो की पत्नी को कैसा लगा होगा,
भरी आँखो से आखिरी बार जब चूम कर विदा किया होगा।

सोचो शहीदो की मंगेतर को कैसा लगा होगा,
डोली लाने वाले की अर्थी को जब खुद ने विदा किया होगा।

सोचो शहीदो के दुग्धमुँहे उन बच्चो का -रमा-
जिन्होंने बिना देखे पिता को मुखाग्नि दिया होगा।

कैसे? मैं माफ करूँ

कैसे? मैं माफ करूँ
उन गुनाहगारो को जिन्होंने
हमारा प्राचीन गौरवशाली
इतिहास मिटाया है।
कैसे? मैं माफ करूँ
उन पापियो को जिन्होंने
माँओ की गोद से
बच्चों को छुड़ाया है।
कैसे? मैं माफ करूँ
उन अत्याचारो को जिन्होंने
हमारी बहन बेटियो की
इज्जत मिट्टी में मिलाया है।
कैसे? मैं माफ करूँ
उन दोषियो को जिन्होंने
इंसानो के बीच प्रेम की
जगह नफरत फैलाया है।
कैसे? मैं माफ करूं
उन दरिंदरो को जिन्होंने
इंसानियत का चोला पहन
इंसानी रिश्ते का खून बहाया है।
कैसे, कैसे, कैसे?
मैं माफ करूँ, उन्हे
-रमा- जिन्होंने पाक धरा में
हाहाकार आज भी मचाया है।

देर

सभी बड़े
अपने-अपने को
मनाने में
बहुत देर कर दिए।

जान
चली गई
सैकड़ो मासूमो की
माँ-बाप बिखर गए।

भगवान
कहलाने वाले
बहुत खुश हो रहे
कि वो जीत गए।

जिनसे जीते वो
उन्होंने कुछ नहीं हारा
जिनके बच्चे गए
जबकि वो सब हार गए।

अतीत से लेकर आज भी
ऐसा ही होता आ रहा
अमीरो की लड़ाई में
गरीब मारे गए।

बारिश

बारिश की बूँदे ही
धरती और आकाश को मिलाती है,
बारिश की बूँदे ही
वसुंधरा की पूरी प्यास बुझाती है,
बारिश की बूँदे ही
सारे चमन को पूरा महकाती है,
बारिश की बूँदे ही
धरती पर पूरी हरियाली फैलाती है,
बारिश की बूँदे ही
किसानो के मुख पे खुशी ले लाती है,
बारिश की बूँदे ही
सूखी नदियों को पूरा भर जाती है,
बारिश की बूँदे ही
नदियों का समुद्र से संगम कराती है,
बारिश की बूँदे ही
प्रकृति की खूबसूरती को बढाती है,
बारिश की बूँदे ही
वनस्पतियो में जान डाल जाती है,
बारिश की बूँदे ही
पिया मिलन की आस जगाती है,
बारिश की बूँदे ही
नयी खुशियों के सपने दिखाती है,
बारिश की बूँदे ही
-रमा- फिर एक नयी प्यास जगाती है।

मायने

ऐ....जिंदगी तू भी बड़ी अजीब खेल खेल रही है

कुछ दिन पहले जो, सबेरे से ही
उठते-भागते, घूमते-फिरते रहते थे
उन्हें भी घर में सुबह से लेकर शाम, रात तक पूरा बैठा दी है।

जो पहले घर से बाहर, निकल कर सोचते थे,
खुली हवा, बाहर अच्छे दोस्त मिलते है
उनसे ही आज तूने पूरी दूरी करवा दी है।

और फिर अपने, सिर्फ अपने परिवार में
प्रेम से रहना सिखला दी है, परिवार का महत्व बतला दी है
जिन परिवार के सदस्य बाहर है, उन्हें उनका मान बतला दी है।

बाहर के खाने, घर के खाने में, प्यार का तड़का समझा दी है
ऐ जिंदगी तूने तो हर एक आदमी के, जीने का सलीका ही बदल दी है
और जिंदगी की सारी सच्चाई, इंसान के सामने ला दी है।

कितनी सुविधा, असुविधा में जी सकता है इंसान
इन सबके मायने, एक ही झटके में
-रमा-जिंदगी ने सबको बता दी है।

आस्तीन का सांप

मेरे देश के लोगों को आखिर.....
क्या होता जा रहा है
देश में फैला रहे खुद नफरत
और पड़ोसी मुल्क को दुश्मन बता रहा है ।
देश में छोटे-छोटे बच्चों के
दूध में, पानी के साथ
हानिकारक पदार्थ मिलाया जा रहा है
और चायना को मिलावटी देश बता रहा है ।
देश की बहन-बेटी की आबरू
देश के ही लोगों द्वारा लूटा जा रहा है,
इस बात को दबाने के लिए
कमजोर वर्ग को दबंगों से पिटवाया व मरवाया जा रहा है।
नौकरी के नाम पे,
हर वर्ग को एकदूसरे से, लड़वाया जा रहा है लेकिन .....
बिक गई कई कम्पनियाँ मीडिया
उसे नहीं दिखाया रहा है ।
हिन्दू-मुस्लिम के नाम से
गरीब-मासूमों को दंगो में मारा जा रहा है
फिर न्याय दिलाने के नाम से
बड़ी-बड़ी राजनीति कर, उनको शांत कराया जा रहा है।
कुछ ही लोगों द्वारा
इतिहास को बदल कर, झूठा बताया जा रहा है
निज स्वार्थ के लिए "रमा" आस्तीन के सांप
दूसरों को विषधर बता रहा है ।

चिंतन

मैं महिला हूँ तो,
महिलाओं की बात करूंगी,
सर्वप्रथम माता सावित्री बाई फुले को
नमन करूंगी।
चिंतन तो,
ज्योतिबा फुले का
मानना ही होगा,
सबसे पहले क्यों? पढ़ाया
सावित्री बाई को
ये जानना होगा,
जानते थे वे
जिस घर की नारी पढ़ी-लिखी होगी,
उस घर की सुंदरता,
स्वर्ग से कम नहीं होगी,
सावित्रीबाई ने भी मान रखा
अपने जीवन साथी का,
ठान ली उसने भी नारियों को
शिक्षा का अधिकार दिलाने का,
अब "रमा" हम सबको भी
गाँव-गाँव में जाना ही होगा,
जहाँ ना पहुंची शिक्षा,
वहाँ अपना कर्तव्य निभाना होगा।

प्रकृति का दर्द- कोरोना

आज प्रकृति कह रही है,
खूब किया खिलवाड़ मेरे साथ मानव ने।
मेरे ही आंगन में पल कर,
मुझ पर ही छेद-छेद किया मानव ने।
प्रेम की जगह नफरत फैला कर,
मेरे ही टुकड़े कर बाँट दिया मानव ने।
स्वार्थी स्वभाव के कारण मेरे,
जन्म दिए जीवों को मारा मानव ने।
अपने हवस का शिकार बनाया,
बुद्धिजीवी कहलाने वाले ही मानव ने।
मेरे नन्हें मुन्ने फूल,पेड़-पौधों का,
बड़ी बेरहमी से कत्ल किया मानव ने।
मेरी बड़ी-बड़ी नदियों को भी,
मौका मिलते ही दूषित किया मानव ने।
मेरे बदन में जहरीले चीजों को,
बुरी तरह से दफनाया मानव ने।
मेरी सबसे प्यारी कृति मासूम बच्चे,
उसको भी मजदूर बनाया मानव ने।
देवी स्वरूप बेटी-नारियों की इज्जत,
लूट मेरा भी अपमान किया मानव ने।
मेरी देखरेख, मुझे समझने वालों को,
मुझसे ही अलग किया मानव ने।
माँ हूँ करके माफ करते आई -रमा-
लेकिन देख मेरा ही बुरा हाल किया मानव ने ।

हृदय तल से नमन

खुद की परवाह कम, लेकिन हमारे लिए ज्यादा सोच रहे है,
ऐसे मेरे डॉक्टर भाई-बहनों को मेरा शत-शत नमन है।

सच्ची सेवा भाव से जो लगाती मरहम और दवा दे रही है,
ऐसी मेरी महान ममतामयी बहनों को मेरा शत-शत नमन है।

बेमौसम बारिश के बीच में भी रात भर चौराहे पर खड़े है,
ऐसे मेरे पुलिस वाले भाईयों को मेरा शत-शत नमन है।

नगर, शहर और पर्यावरण को जो साफ करने में तत्पर लगे है,
ऐसे मेरे दमदार सफाईकर्मी भाई-बहनों को मेरा शत-शत नमन है।

-शासन-प्रशासन के वो सभी जो अपनी ड्यूटी पर डटे है,
ऐसे सब अधिकारी-कर्मचारी को मेरा शत-शत नमन है।

देश-विदेश की खबर, जान जोखिम में डाल कर ला रहे है,
ऐसे मेरे मीडिया से जुड़े लोगों को भी मेरा शत-शत नमन है।

समाज सेवा आज निस्वार्थ भाव से जो लोग कर रहे है,
ऐसे मेरे सभी भारतीय बंधुओ को मेरा शत-शत नमन है।

आज जो कोरोना महामारी को खत्म करने में सहयोग दे रहे है "रमा"
ऐसे सभी तपस्वी मानव को मेरा ह्रदय तल से शत-शत नमन है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

वर्तमान स्थिति को देखते हुए सृजन करना, हमारी जागरूकता का भी परिचय देता है, इस समय विश्व के बहुत से देश कोरोना महामारी की चपेट में है, जिसमें शासन, प्रशासन अपने स्तर से जिम्मेदारी निभा ही रहा है, उसमें हम लेखकों का भी दायित्व बनता है, हम अपनी कलम के माध्यम से भी अपने लोगों को जागरूक कर सकते है।

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन की संपादक महोदया डॉ. प्रीति समकित सुराना जी ने इसी को ध्यान में रखते हुए, यह बीड़ा उठाई और अपने अंतरा शब्दशक्ति व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से हम सब लेखकों, कवियों, साहित्यकारों से पहले की तरह आज भी सामाजिक जिम्मेदारी में कलम के महत्व को समझाते हुए लेख, कविता, विचारों का महत्व बताने की ठानी, और 'आपातकाल में सृजन' करवा कर हम सबकी कलम को ताकत बनाने के साथ-साथ विपरीत परिस्थितियों में भी चिंतन, मनन, तर्क-वितर्क की शक्ति का संचार सभी के मन-मष्तिष्क में डालने का काम किया।

इससे लिए मैं धन्यवाद देती हूँ, आ. प्रीति जी को जिन्होंने देश की इस संकट की घड़ी में भी अपने-अपने कार्यक्षेत्र को जारी रखने की प्रेरणा दी, और हम कलमकारों से मानव एवं देश हित में कलम का इस्तेमाल करवाया।

धन्यवाद, जय हिंद!

रचनाकार

रमा-प्रेम-शांति

बालाघाट, मध्यप्रदेश

Email- tekamrama81@gmail.com

Mobile - 8458932800

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-211-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/